विश्व न्याय मन्दिर

जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे किसी भी समुदाय–समूह में जो कुछ भी घटित हुआ उसे दोनों ही दृष्टिकोणों से देखना लाभदायक रहेगा–एक तो बच्चों, किशोरों, और युवाओं एवं वयस्कों के लिए आयोजित तीन शैक्षणिक क्रियाओं के माध्यम से, और साथ ही विकास की लय के लिए अपरिहार्य गतिविधियों के चक्रों के नजरिये से। एक पच्चीस वर्षीय उपक्रम के आंशिक भागों में से, विकास–प्रक्रिया की ज्यादातर पहचानने योग्य विशेषताओं में से अनेक विशेषताएं जो हमें आज देखने को मिल रही हैं, अच्छी तरह स्थापित होने लगी थीं।

–रिज़वान 2021

मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO Delhi on 10/11.03. 2022

Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

वर्ष : 58 अंक 03 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख

मार्च 2022 बहाई वर्ष : 178–79

मध्य प्रदेश में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

मध्य प्रदेश परिषद द्वारा, सम्मेलनों की श्रृंखला की तैयारी एवं मित्रों के सहयोग और मार्गदर्शन के प्रवाह को ध्यान में रखते हुये राज्यस्तर पर एक कार्य दल की नियुक्ति की गई है जो पूरे प्रदेश में सम्मेलन की तैयारियों के साथ–साथ अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर कार्य कर रही है। कार्य दल द्वारा प्रदेश से प्राप्त सम्मेलन की योजना को देखते हुये, फैसिलिटेटर के प्रशिक्षण की एक योजना तैयार की जिसमें प्रदेश के प्रत्येक सबरीजन में एक दिवसीय फैसिलिटेटर कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया, जिसमें प्रत्येक सबरीजन में स्थित सभी समुदाय समूहों से चुने हुये मित्रों को फैसिलिटेटर प्रशिक्षण में आमंत्रित किया गया और उस कार्यक्रम को भौतिक व्यवस्थाओं हेतु उस सबरीजन में स्थित मदर स्थानीय आध्यात्मिक सभा को एक पत्र लिखा गया जिसमें प्रशिक्षण से सम्बधित महत्वपूर्ण विषय शामिल थे।

1. प्रथम फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम भोपाल सबरीजन में 5 फरवरी 2022 को आयोजित किया गया। इस फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रूप से भोपाल सबरीजन के अर्न्तगत आने वाले समुदाय समूहों से मित्रों को आमंत्रित किया गया, जिसमें भोपाल समुदाय के इन्द्रपुरी, सोनागिरी, कोकता, बागसेवनिया और श्यामपुर समुदाय के कॉलोनी एरिया से लगभग 20 से 25 मित्रों ने भाग लिया। इसके साथ ही बदवार समुदाय से 4 अन्य मित्रों ने भाग लिया जो फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए रात भर ट्रेन से यात्रा कर भोपाल पहुंचे। इस प्रकार ट्रेनिंग के दौरान लगभग 35 से 40 मित्र शामिल हुये।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन स्टेट कार्य दल के माध्यम से किया गया, जिसमें सम्मेलन के लिए तैयार पाठ्य सामग्री का गहन अध्ययन तो किया गया, साथ ही बीच के समय में एक फिल्म भी मित्रों को दिखाई गई जिसमें बहाई समुदाय की 100 वर्षों की झलकियाँ शामिल थीं।

2. दूसरा फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 फरवरी 2022 को इन्दौर

शेष पृष्ठ 3 पर



भोपाल में आयोजित कार्यक्रम के प्रतिभागी

इस अंक में

महाराष्ट्र का कोळा गांव बढ़ती गतिविधियों की ओर अग्रसर

महाराष्ट्र के सांगली समुदाय के उपक्षेत्र समन्वयकों और सहायक मण्डल सदस्यों ने मिलकर सांगोला समुदाय के कोळा गांव में गतिविधियाँ शुरू करने पर चर्चा की। इसके लिए पहले उन सभी ने गांव का अच्छी तरह से भ्रमण किया और वहां की परिस्थिति को समझा। गांव का निरीक्षण करने के उपरांत वे गांव के सरपंच से मिले और उन्हें मूल गतिविधियों के बारे में बताया, जिससे प्रभावित होकर सरपंच ने गतिविधियां शुरू करने की अनुमति दी साथ ही, एक बड़ा कक्ष भी उपलब्ध कराया। चूंकि सरपंच स्वयं एक शिक्षक थे तो उन्होंने एक विद्यालय में मिलने के लिए कहा जिसमें वह पढ़ाते थे। सरपंच ने विद्यालय के प्राचार्य से मिलवाया, उन्हें भी बहाई गतिविधियों के बारे में बताया गया। जिसे सुनकर प्राचार्य ने विद्यार्थियों के साथ अभियान आरम्भ करने की अनुमति दे दी।

निश्चित तिथि और स्थान पर अभियान का शुभारम्भ किया गया। प्रतिभागियों की संख्या अधिक होने के कारण दो समूह बनाये गये, जिनमें सुबह के समय कक्षा आठवीं और नौंवी के 29 विद्यार्थी शामिल हुए और दूसरा समूह दोपहर बाद जिसमें दसवीं कक्षा के 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया। रूही पुस्तक–1 का अध्ययन आरम्भ किया गया, साथ ही साथ कुछ गीत, संगीत और मनोरंजन भी हुआ। सभी युवाओं ने अभियान का आनंद लिया। शाम को अभियान समाप्त होने पर युवाओं के घरों का भ्रमण किया गया और शाम को अगले दिन की योजना भी बनाई गई।

रूही पुस्तक का दूसरा भाग प्रार्थना शुरू हुआ। सभी युवाओं को प्रार्थना का उद्देश्य और महत्व बताया गया। उपस्थित सभी युवाओं को निगूढ़ वचन और भगवद्वाणी की पुस्तक भी दी गई। यह अभियान लगभग एक सप्ताह तक चला। रूही पुस्तक–1 पूर्ण होने के बाद उन्हें पुस्तक–3 और 5 के बारे में बताया।

इसके अलावा, बहाई मित्रों ने एक मराठी विद्यालय का भी भ्रमण किया और वहां के प्राचार्य से भेंट की तथा उन्हें भी गतिविधियों के बारे में बताया। वे भी अपने विद्यार्थियों को गतिविधियों में शामिल करने के लिए तैयार हो गए, परन्तु कोविड के कारण बड़ी संख्या में बच्चों को शामिल नहीं किया जा सकता था इसलिए छोटे–छोटे समूह बनाए गए। इस प्रकार कोळा गांव में बहाई गतिविधियों को बढ़ाया गया।



कोळा गांव में मूल–गतिविधियों में भाग लेने वाले युवाओं का एक समूह

बहाई विवाह



गुजरात में आहवा क्लस्टर के भिस्या समुदाय की सुश्री जागृति प्रभुभाई गावित और पिंपरी क्लस्टर के लवारिया समुदाय के श्री त्रुषार चंदूभाई ठाकरे का विवाह 9 जनवरी 2022 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



कर्नाटक के बिदादी क्लस्टर के श्री सुनील ए. और सुश्री सौम्या ई. का विवाह बहाई विधिविधान के अनुसार 6 फरवरी 2022 को सम्पन्न हुआ।



गुजरात के भरूच क्लस्टर के श्री अनीस प्रकाशभाई दांडीवाला और आहवा क्लस्टर की ग्लोरी शंकरभाई आहिरे का विवाह बहाई विधिविधान के अनुसार 10 फरवरी 2022 को सम्पन्न हुआ।



गुजरात के गलकुंड क्लस्टर में पांडव समुदाय की सुश्री रंजीता मधुभाई गौंडा और नानापाड़ा क्लस्टर के श्री वैभव श्रावणभाई गैन का विवाह बहाई विधिविधान के अनुसार 13 फरवरी 2022 को सम्पन्न हुआ।

स्वागत नवरूज़

प्रकृति के बदलते रंग कभी–कभी हमें यह सोचने को मजबूर कर देते हैं कि वह कौन चित्रकार है, जिसने इतने अनूठे रंग भरे हैं प्रकृति के दामन में ? कभी मदमाते वसंत के रंग, कभी खिले–खिले फूलों से भरी क्यारियाँ, कभी हरी–भरी वसुंधरा तो कभी वीरान पड़े सूखे पत्तों से भरी प्रकृति की गोद। कभी सूरज की रोशनी के लिए तरसता जीवन तो कभी सूरज की गर्मी से परेशान प्रकृति, कभी बारिश की रिमझिम फुहारों की प्रतीक्षा तो कभी बाढ़ से परेशान जनजीवन। प्रकृति की यह अद्‌भुत लीला जब समझ के दायरे से बाहर होती है तो समर्पित और विमुग्ध मन बस यही स्वीकार बैठता है कि जिस चित्रकार ने पृथ्वी और स्वर्ग की रचना की, जिसने जीवों को बनाया उसी ने तो अपनी महातूलिका से प्रकृति में विविध रंग भरे, प्रकृति को सजाया–संवारा और मानव को सम्पन्नता के साधन के रूप में इसे भेंट कर दिया। सूर्य की गति उसने कुछ इस प्रकार निर्धारित की कि प्रकृति में भिन्न–भिन्न मौसम के रंग भर आये और इस प्रकार अलग–अलग मौसम आये–कभी वसंत, कभी पतझड़, कभी ग्रीष्मकाल तो कभी शीत ऋतु। इस मौसम पर ही हमारा जीवन निर्भर होता है, हमारी खेती होती थी–बीज बोने का मौसम, फसल सींचने का मौसम, फसल काटने का मौसम। इस मौसम के साथ जुड़ गये हमारे उत्सव। वसंत ऋतु या सूर्य के भूमध्य रेखा को पार करने का काल प्रकृति के फिर से हरा–भरा होने का काल बना। अनेक देशों में इस समय उत्सव का माहौल होता है, प्रकृति के नवीकरण का उत्सव, वसंतोत्सव। इस अवसर पर अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान आयोजित किये जाते हैं।

कोई 178 साल पहले बहाई धर्म का उद्‌घोष हुआ। बहाउल्लाह इस धर्म के संस्थापक अवतार हैं, जिन्होंने सन् 1817 में ईरान की धरती पर अवतार धारण किया। ईरान की धरती से उपजा यह संदेश आज दुनिया के कोने–कोने में फैल चुका है और आप जिस रंग, जिस नस्ल, जिस वर्ण, जिस वर्ग की भी कल्पना कर सकते हैं उन सब के बीच बहाई धर्म का संदेश पहुँच चुका है। इन्सायक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के मुताबिक ईसाई धर्म के बाद दूसरा सबसे बड़े क्षेत्र में विस्तार पाने वाला धर्म बहाई धर्म है।

बहाई समुदाय की मान्यता है कि धरती पर एक आध्यात्मिक वसंत के आने के अनेक प्रमाण उपस्थित हैं। बहाउल्लाह कहते हैं, ''दिव्य बंसत आ गया है...सर्वदयालु का महापर्व शीघ्र ही निकट आ रहा है। अपने को तैयार कर ले और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष ईश्वर के नाम को मुखरित कर दे और उसका गुनगान कुछ इस प्रकार कर कि सम्पूर्ण सृष्टि एक नई चेतना से भर जाये।''

बहाई समुदाय की यह मान्यता है कि वर्तमान आध्यात्मिक वसंत काल के पथ–प्रदर्शक बहाउल्लाह ने अतीत के अवतारों द्वारा दिये गये वचन पूरे किये हैं, समस्त भविष्यवाणियों को मूर्त रूप दिया है और ऐसी शिक्षायें दी हैं जो समस्त मानवजाति को एक सूत्र में पिरोकर एक विश्वव्यापी धर्म एक विश्व–परिवार के सदस्य के रूप में विकास के पथ पर ले जायेगा। बहाउल्लाह में हम सभी भविष्यवाणियों को पूरा होते पाते हैं। बहाई समुदाय प्रत्येक अवतार को दिव्य शक्ति से परिपूरित मानता है।

विश्व में अनेक कैलेंडर हैं, लेकिन बहाई कैलेंडर ही पहला कैलेंडर है जो किसी अवतार द्वारा मानवजाति को दिया गया हो। बहाई कैलेंडर पूरी तरह सूर्य से प्रभावित है। इसमें पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर परिक्रमा के आधार पर समय का बंटबारा किया गया है। चूंकि बहाई कैलेंडर सूर्य पर आधारित है इसलिए यह पूर्णतया दोषरहित है। 'बयान' के प्रकटकर्ता दिव्यात्मा बाब ने एक वर्ष को 19 दिनों के 19 महीनों में बांटने की अद्‌भुत अभिलाषा प्रकट की जिससे 361 दिनों का हिसाब हो जाता है। शेष बचे चार, पाँच दिनों को लोंद के दिवस अथवा अय्याम–ए–हा के नाम से जाना जाता है ये दिवस खुशियां मनाने के, दान करने के, उल्लास और प्रार्थना के दिन होते हैं जिनके बाद प्रारंभ होता है वर्ष का अंतिम महीना अला का महीना अर्थात् उपवास के उन्नीस दिन। अय्याम–ए–हा के दिनों को किताब–ए–अकदस के प्रकटकर्ता बहाउल्लाह ने बहाई वर्ष के 18 वें और 19 वें महीने के मध्य डाल दिया जिससे समय की गणना ठीक हो गई। बाब ने सभी महीनों का नामकरण भी ईश्वर की विभूतियों के ऊपर किया। 21 मार्च को जब रात और दिन बराबर होते हैं तब हम बहाई अपना नववर्ष दिवस मनाते हैं।

बहाई पंचांग में वर्ष के इस प्रथम माह का नाम 'बहा' है। यानि प्रकाश का महीना; वह प्रकाश जिससे पूरा वर्ष प्रकाशित होगा। इसीलिए इस मास के प्रथम दिवस 'नवरूज़' को बहाइयों को कुछ ऐसे विशेष कार्यों की योजना बनानी चाहिए जिसकी सरगर्मी से पूरा वर्ष प्रकाशित रहे। किसी भी शुभ कार्य का निर्णय या प्रारंभ इस दिवस को स्मरणीय बना दे, यही हमारी चेष्टा होनी चाहिए। इस दिवस की गरिमा और महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बहाउल्लाह ने ''किताब–ए– अकदस'' में लिखा है–''धन्य है वह जो 'बहा' महीने के प्रथम दिवस में प्रवेश करता है–वह दिन जिसे ईश्वर ने इस 'महानाम' के लिए पावन बनाया है और धन्य है वह जो इस दिन में उन कृपाओं की गवाही देता है, जो ईश्वर ने उसे प्रदान की हैं। वस्तुतः, हम उनमें से हैं जो अपने कर्मो के माध्यम से सभी लोगों को आवृत्त करने वाली प्रभु की उदारता के लिए धन्यवाद प्रदर्शित करते हैं। ''इस युग में वास्तव में सभी रचित वस्तुओं पर जीवन की सांस प्रवाहित की गई है। महान सौभाग्य है उसका जो उल्लास और आनंद से इसका स्वागत करता है। हम प्रमाणित करते हैं कि वह यर्थाथतः उन लोगों में से है जो दिव्य आनंद से परिपूरित है।''

आइये, हम ह्दय से स्वागत करें नववर्ष का और यह संकल्प लें कि आने वाले दिनों में हम बहाई प्रशिक्षण संस्थान के सभी पाठ्यक्रम पूरे करेंगे और प्रभुधर्म के शिक्षण और दृढ़ीकरण के लिये चार मूल गतिविधियों में भाग लेने के लिये पूरी निष्ठा से समर्पित होंगे। निष्ठा इस हद तक कि प्रभुधर्म के लिये अपना सब कुछ समर्पित करने की भावना से मन–प्राण ओत–प्रोत हों। त्याग उस हद तक कि व्यक्तिगत सुख–सुविधा बिसरा बैठें और आचरण इतना पवित्र की पावनता की सार्थकता हम समझ पायें। प्रकाश के इस युग को हम नमन करें, नये वर्ष का स्वागत करने की हम तैयारियाँ करें और नवरूज़ का उल्लास आपस में बांटें।

दिसम्बर 2021 तक मूल–गतिविधियों के सांख्यिकी आंकड़े

क्षेत्रीय / राज्य बहाई परिषद	भक्तिपरक बैठकों की संख्या	भक्तिपरक बैठकों में उपस्थिति	बच्चों की बहाई कक्षाओं की संख्या	बच्चों की बहाई कक्षाओं में उपस्थिति	किशोर समूहों की संख्या	किशोर समूहों में उपस्थिति	स्टडी सर्कल की संख्या	स्टडी सर्कल में उपस्थिति	कुल मूल गतिविधियां	मूल गतिविधियों में कुल उपस्थिति
आंध्र प्रदेश+	233	1205	47	290	22	135	7	21	309	1651
असम+	1544	5553	86	529	45	267	25	119	1700	6468
बिहार	18546	134838	1369	11984	981	8490	359	2915	21255	158227
छत्तीसगढ़'	638	3520	70	594	40	268	30	108	778	4490
गुजरात	2644	10874	179	1724	122	881	95	744	3040	14223
झारखण्ड	3690	19754	354	2525	222	1464	143	1040	4409	24783
कर्नाटक	48	194	9	40	20	124	21	56	98	414
केरल	462	1742	34	209	7	25	17	50	520	2026
मध्य प्रदेश	552	4604	107	1109	80	743	59	392	798	6848
महाराष्ट्र+	25280	118371	963	10186	830	7864	239	1597	27312	138018
मणिपुर+	365	1137	38	255	24	144	39	124	466	1660
ओडिशा	2334	9284	146	971	87	486	65	217	2632	10958
पंजाब+	1024	5305	93	796	89	722	25	110	1231	6933
राजस्थान	644	3260	77	588	59	354	44	238	824	4440
सिक्किम+	1149	3550	149	917	80	376	123	507	1501	5350
तमिलनाडु+	8389	33214	502	3899	368	2569	415	1625	9674	41307
त्रिपुरा	2204	12887	157	1123	102	590	154	485	2617	15085
उत्तर प्रदेश+	78225	545990	5179	38015	3463	25045	1699	13652	88566	622702
पश्चिम बंगाल	25155	134788	2500	17828	1833	12210	1056	6737	30544	171563
कुल	173126	1050070	12059	93582	8474	62757	4615	30737	198274	1237146

*Data of Chhattisgarh is as of October 2021

मध्य प्रदेश में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

पृष्ठ 1 का शेष

सबरीजन के लिए बहाई भवन इन्दौर में आयोजित किया गया। यह फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम इन्दौर और इन्दौर के पड़ोसी



इंदौर के कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

समुदायों के मित्रों के लिए आयोजित किया गया, जिसमें इन्दौर, शाजापुर, उज्जैन, महू और खरगौन समुदाय समूहों से लगभग 60 मित्रों ने भाग लिया।



ग्वालियर में आयोजित सम्मेलन में अध्ययन करते हुए प्रतिभागी

कार्यक्रम के दौरान सम्मेलन के सम्बध में कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर परामर्श किया गया, साथ ही सम्मेलन के लिए तैयार की गई अध्ययन सामग्री को भी गहनता से पढ़ा गया और चलचित्र भी दिखाए गए।

3. तीसरा फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम 13 फरवरी 2022 को ग्वालियर सबरीजन के लिए बहाई भवन ग्वालियर में आयोजित किया। जिसमें ग्वालियर सुसैरा और जौरा समुदाय समूहों से कुल 25 मित्रों ने भाग लिया।

इसके अलावा सुसैरा, मेंहगांव और भिण्ड समुदाय समूहों में लगभग 35 से 40 मित्रों के साथ तीन अलग–अलग दिनों के अंतराल में फैसिलिटेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

बहाई विश्व केन्द्र में सेवा के अवसर

जैसे–जैसे दुनिया के हर भाग में प्रभुधर्म के कार्य फैलते जा रहे हैं वैसे–वैसे बहाई विश्व केन्द्र की प्रभावशाली कार्यविधि का महत्व बढ़ता जा रहा है। प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र का वर्णन शोगी एफेंदी द्वारा कुछ इन शब्दों में किया गया है : विश्व केन्द्र "नई विश्व व्यवस्था की एजेंसियों की धुरी है," यह विविध देशों से आये अनुयायियों के निरन्तर प्रवाह से सम्बलित है, जो निःस्वार्थ भाव से सेवा की एक निश्चित अवधि के लिये आते हैं, जो अवधि भिन्न–भिन्न हुआ करती है। विश्व केन्द्र में स्टॉफ की ज़रूरत विभिन्न कामों के लिये होती है, जो उपलब्ध संसाधनों और बढ़ती हुई ज़रूरतों के आधार पर निर्भर करते हैं। किसी ख़ास समय में सुयोग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों की ज़रूरत होती है। तो किसी अन्य समय में सामान्य काम–काज के लिये ज़रूरत होती है। विश्व केन्द्र में सेवा की प्रकृति के कारण 12 महीने या अधिक समय के लिये यह ज़रूरत पड़ती है। इच्छुक व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिये।

इस समय हम आपका ध्यान विश्व केन्द्र में विभिन्न प्रकार के सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) से संबंधित क्षेत्रों में कौशल या प्रशिक्षण वाले पेशेवरों के लिए एक विशेष आवश्यकता की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। विश्व केन्द्र में कंप्यूटर विज्ञान, सिस्टम और नेटवर्क प्रशासन, सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग, साइबर सुरक्षा, और आईटी समाधान, आईटी सिस्टम और नेटवर्क के विकास, डिजाइन, रखरखाव, उन्नयन और परिचालन दक्षता, प्रासंगिक ज्ञान या अनुभव वाले मित्रों की आवश्यकता है। सॉफ्टवेयर, वेब और एप्लिकेशन डेवलपमेंट और टेस्टिंग, क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर, आईटी एनालिसिस या प्रोजेक्ट मैनेजमेंट में अनुभव रखने वाले व्यक्तियों की इस समय विशेष रूप से आवश्यकता है।

सेवा देने के इच्छुक किसी भी मित्र को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाता है कि कार्मिक विभाग से serve@bwc.org पर सम्पर्क करे।

आप सीधे अपना आवेदन https://service.bwc.org/ पर भी भेज सकते हैं।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 — Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
Delhi P.S.O. — Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2021-22-23

अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी के अवसर पर कहानी जो अब्दुल बहा ने कही

जिनोलिया ने रोम की साम्राज्ञी होना अस्वीकार कर दिया

"मानवता के संसार के दो पंख हैं – एक महिला और दूसरा पुरूष। जब तक दोनों पंखों का बराबर विकास नहीं होगा तब तक पक्षी उड़ नहीं सकेगा।"
—अब्दुल—बहा

अतीत काल में कुछ महिलाओं ने आगे बढ़ कर राष्ट्र के क्रियाकलापों में हिस्सा लिया और अपनी उपलब्धियों में पुरुषों को भी पीछे छोड़ दिया। उनमें से एक थी पूर्व की रानी जिनोलिया, जिसकी राजधानी थी पालमयरा। आज भी उस शहर का दृश्य उसकी महान योग्यता और सम्प्रभुता का साक्षी है। वहाँ पर यात्रियों को तीसरी सदी में इस विशिष्ट महिला द्वारा बनाये गये महलों और सर्वाधिक ताकत और मजबूत किलेबंदी के खंडहर मिले। वह एथेंस के गवर्नर जेनरल की पत्नी थी। गवर्नर की मृत्यु के बाद उसकी जगह पर उसने कार्यभार सम्भाला और अपने प्रदेश पर बहुत ही सुंदर ढंग से शासन किया। बाद में उसने सीरिया को जीता, मिस्र को पराजित किया और राजनीतिक दूरदर्शिता से एक परिपूर्ण अद्‌भुत साम्राज्य की नींव डाली। रोमन सम्राट ने उसके विरोध में एक बड़ी सेना भेजी। युद्ध की भव्यता से भरपूर यह सेना जब सीरिया पहुँची तो अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए जिनोलिया स्वयं युद्ध क्षेत्र में प्रकट हुई। युद्ध के दिन वह पूरी राजसी पोशाक में सजी हुई, सिर पर मुकुट पहने हुए हाथ में तलवार लिए हुए चढ़ाई करने वाली विशाल सेना से मिलने निकली। उसके साहस और सैन्य रणनीति के कारण रोमन सेना पूरी तरह बिखर गई और वे फिर से हमला करने के योग्य नहीं रही। रोम की सरकार ने एक परामर्श सभा रखी, जिसमें यह निष्कर्ष निकला कि, कोई भी कमांडर हम क्यों न भेजें हम उसे पराजित नहीं कर सकते। अतः सम्राट आओरेलियन के साथ जिनेलिया के विरूद्ध अपनी सेना का नेतृत्व करने के लिए जाना चाहिये। आओरेलियन दो सौ हजार सैनिकों के साथ सीरिया में घुसा। जिनेलिया की सेना आकार में इससे बहुत छोटी थी। दो वर्षो तक बिना कोई सफलता हासिल किये हुए रोमनों ने उसे पालमयरा में घेर कर रखा। अंततः पालमयरा के सैनिकों का राशन पानी समाप्त हो गया और भूखमरी के कारण उन्हें आत्मसमर्पण करने को बाध्य होना पड़ा। वह युद्ध में पराजित नहीं हुई। आओरेलियन उसे बंदी बनाकर रोम ले गया। अपने शहर में प्रवेश करने के दिन उसने एक विजय यात्रा का आयोजन किया – पहले हाथी, फिर शेर—बाघ, पक्षी, बंदरों के बाद जिनोलिया। उसके सिर पर एक मुकुट था सोने की जंजीर उसके गले में थी। साम्राज्ञी की गरिमा के साथ, अपमान से बेखबर दायें—बायें देखते हुए उसने कहा, *"मैं एक महिला होने में और रोमन सम्राट का विरोध करने पर गौरव महसूस करती हूँ।"* (उस काल में रोमन साम्राज्य ज्ञात धरती का आधा हिस्सा था) और मेरे गले में यह जंजीर अपमान का नहीं मेरे गौरव का चिह्न है। यह मेरी शक्ति का प्रतीक है, पराजय का नहीं।"

अब्दुल—बहा विश्व की कुछ महान और प्रसिद्ध महिलाओं के विषय में बातें कर रहे थे।

झारखण्ड में बहाई कोष से सम्बंधित बैठक

झारखण्ड राज्य में प्रभुधर्म के विकास को और बल प्रदान करने हेतु एवं आगामी सम्मेलनों में स्थानीय कोष की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक दान संबंधी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष के सहायक एवं सहायक मंडल सदस्यों ने मिलकर इस विषय पर परामर्श किया कि कैसे राज्य में बहाई कोष में योगदान देने वाले बहाई मित्रों की संख्या को बढ़ाया जाए तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाए। साथ ही, इसमें स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं का योगदान कैसे हो इस पर भी परामर्श किया गया। परामर्श के दौरान जिस एक तरीके पर चर्चा की गई वह यह था कि जब भी कोई बैठक स्थानीय और राज्य के स्तर पर आयोजित की जायेगी वहाँ दान संबंधी विशेष विषय पर अध्ययन अथवा परामर्श जरूर किया जायेगा और प्रयास रहेगा की कुछ दान की भी प्राप्ति हो सके। दूसरा कुछ ऐसे 100 परिवारों के नामों को रेखांकित किया गया जिन्हें आने वाले कुछ समय तक दान के संदर्भ में दृढ़ किया जायेगा। दान संबंधी प्रेणादायक अध्ययन सामग्री एवं पवित्र वचनों से सम्बंधित गद्यांश ऑनलाइन अथवा विशेष अवसरों पर उनके साथ अध्ययन किया जाता रहता है, जिससे उनको दान देने के पवित्र कर्तव्य के संबंध में और दृढ़ तथा प्रोत्साहित किया जाता है। सम्मेलनों को आत्मनिर्भर बनाने के संदर्भ में जमशेदपुर की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के साथ भी एक परामर्शीय बैठक की गयी। जमशेदपुर एक अग्रणी क्लस्टर होने के कारण इनका योगदान सिर्फ जमशेदपुर में ही नहीं इसके अन्य पडोसी क्लस्टरों में भी रहता है। इन सम्मेलनों में भाग लेने वाले परिवारों ने ही सम्मेलनों को स्वावलंबी बनाने की योजना बनाई है।

● निधन

श्रीमती विजयश्री पवार

हमें यह बताते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि महाराष्ट्र के



कल्याण के श्री प्रमोद पवार की माताजी श्रीमती विजयश्री पवार का 21 जनवरी, 2022 को निधन हो गया। वे 78 वर्ष की थीं। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

निवेदन

प्रिय मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय—समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें बहाई समाचार में प्रकाशित कर सकें।
धन्यवाद !

कुल पृष्ठ संख्या—4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2021-22-23
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ—25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़—1, नई दिल्ली—110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO Delhi on 10/11.03.2022
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ—25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़—1, नई दिल्ली—110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)